Department of Political Science, Deshbandhu College, University of Delhi, New Delhi

Course Teacher: Dr. Sudhir Kumar Garhwal

Contact Info. : sudhirgarhwal@gmail.com /+919999839929)

Name of the Paper: India's Foreign Policy in a Globalizing world

Class: B.A. (Hons.), VI- Semester E-resource for students

ईकाई 4: दक्षिण एशिया में भारत: क्षेत्रीय रणनीतिक बहस

(भारत- श्रीलंका संबंध)

श्रीलंका भारत का निकटतम समुद्री पड़ोसी देश है और क्षेत्रीय सीमा (Territorial boundary) से सिर्फ 30 समुद्री मील (Nautical miles) दूर है। दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक रूप से अनेक समानताएँ देखने को मिलती हैं। यूरोपीय उपनिवेशवाद के बाद श्रीलंका एक देश के रूप में स्थापित हुआ, लेकिन इससे पहले यह विभिन्न भारतीय राज्यों का हिस्सा हुआ करता था। श्रीलंकाई क्रोनिकल्स (जैसे कि दीपवामसा) के अनुसार चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में श्रीलंका के राजा देवनमपिया तिस्सा के शासनकाल के दौरान भारतीय सम्राट अशोक के पुत्र महिंदा द्वारा श्रीलंका में पारंपरिक बौद्ध धर्म की शुरुआत की गई थी। इसी दौरान, बोधि वृक्ष का एक पौधा श्रीलंका लाया गया और मठों और बौद्ध स्मारकों की स्थापना की गई। इनमें इसुरमुनी-विहार और वेसागिरि-विहार पूजा के महत्वपूर्ण केंद्र बने हुए। श्रीलंका में तमिलों ने दक्षिण भारत से हिंदू और तमिल भाषा के संबंध स्थापित किये। इस प्रकार भारत और श्रीलंका के बीच के बीच संबंध 2,500 वर्ष से भी अधिक पुराने हैं। दोनों देश बौद्धिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई पारस्परिकता की एक अनूठी विरासत को साझा करते हैं। हाल के वर्षों में, सभी स्तरों पर निकट संपर्क द्वारा रिश्ते को चिह्नित किया गया है। हाल के वर्षों में, सभी स्तरों पर निकट संपर्क स्थापित करके रिश्तों को मजबूत करने का प्रयास किया गया है। व्यापार और निवेश में वृद्धि हुई है और बुनियादी ढांचे के विकास, शिक्षा, संस्कृति और रक्षा के क्षेत्र में सहयोग आदि में भी वृद्धि देखी जा सकती है। साथ ही साथ दोनों देशों के बीच विकासात्मक सहायता परियोजनाओं (Developmental Assistance Projects) के कार्यान्वयन में हुई महत्वपूर्ण प्रगति ने भी दोस्ती के बंधन को और अधिक मजबूती प्रदान की है। श्रीलंकाई सेना और लिट्टे के बीच लगभग तीन दशक तक चला सशस्त्र संघर्ष मई 2009 में समाप्त हो गया। इस संघर्ष के दौरान, भारत ने आतंकवादी ताकतों के खिलाफ कार्रवाई करने के श्रीलंकाई सरकार के अधिकार का समर्थन किया। श्रीलंका की तमिल समस्या पर भारत हमेशा से ही एक ऐसे राजनीतिक समझौते के पक्ष में रहा है, जो सभी समुदायों को एकीकृत श्रीलंका के ढांचे के अंतर्गत स्वीकार्य हो और लोकतंत्र, बहुलवाद एवं मानवाधिकारों के सम्मान के अनुरूप भी हो। भारत और श्रीलंका के बीच तनावपूर्ण और सहयोगपूर्ण दोनों तरह के संबंधों का मिश्रण देखा जा सकता है। सैन्य गुटों का विरोध, औपनिवेशिक स्वतंत्रता, निःशस्त्रीकरण एवं हिंद महासागर को शांतिपूर्ण रखने के प्रयास संबंधी मुद्दों पर दोनों देश समान विचार रखते हैं। इसके अतिरिक्त दोनों देशों के मध्य विवाद के क्षेत्र भी रहे। सबसे मुख्य विवादित मुद्दा तमिलों, जो कि भारतीय मूल के हैं एवं ब्रिटिश सरकार द्वारा बागवानी मजदूरों के रूप में श्रीलंका ले जाए गए थे, को नागरिक एवं

समान अधिकार दिलाने से संबंधित हैं। दोनों देशों के बीच आपस में सीधी टक्कर नहीं होने का एक अन्य कारण दोनों के बीच सैन्य क्षमता का असंतुलन भी माना जा सकता है। जातीयता (Ethnicity) के मुद्दे पर दोनों के बीच तनावपूर्ण स्थिति हमेशा बनी रही है। लेकिन तमिल समस्या को छोड़कर, बाकी सभी मुद्दों को दोनों देशों द्वारा संतोषजनक रूप से हल किया गया है। इन उतार-चढ़ावों के बावजूद दोनों देशों ने अपने संबंधों में गतिशीलता बनाए रखी है।

भारत के लिए श्रीलंका का भू-राजनीतिक (Geo-Political) महत्व:

हिंद महासागर क्षेत्र में श्रीलंका की एक द्वीप राज्य के रूप में अवस्थिति कई प्रमुख शक्तियों के लिए भू-राजनीतिक रणनीतिक प्रासंगिकता का विषय रहा है। श्रीलंका की रणनीतिक अवस्थिति को दर्शाने वाले कुछ उदाहरणों में 1948 के ब्रिटिश रक्षा और विदेशी मामलों का समझौता और 1962 के यूएसएसआर के साथ समुद्री समझौता आदि इस क्षेत्र में पश्चिमी देशों के हितों को स्पष्ट करते हैं। यहां तक कि जेआर जयवर्धने (1978-1989) और रणसिंघे प्रेमदासा (1989-1993) के कार्यकाल के दौरान अमेरिका ने श्रीलंका को वॉयस ऑफ अमेरिका ट्रांसमिटिंग स्टेशन के निर्माण करने के लिए चुना गया था जिस पर हिन्द महासागर में इलेक्ट्रॉनिक निगरानी और खुफिया जानकारीयों को एकत्र करने के उद्देश्य के लिए इस्तेमाल करने का संदेह था। हाल के वर्षों में राजपक्षे के कार्यकाल में चीन की श्रीलंका में भागीदारी बढ़ गई थी जिसने भारत और श्रीलंका के बीच एक गहरे विवाद को जन्म दिया। ज्ञात रहे कि चीन हिंद महासागर के साथ-साथ इसके दक्षिण में ग्वादर (पाकिस्तान), चटगांव (बांग्लादेश), क्युक फ्रु (म्यांमार) और हंबनटोटा (श्रीलंका) में अत्याधुनिक विशाल बंदरगाहों का निर्माण कर रहा है। चीन की इस मोतीयों की माला (String of Pearl's) रणनीति का उद्देश्य हिंद महासागर में प्रभुत्व स्थापित करके भारत को चारों ओर से घेरना है। 2015 के बाद श्रीलंका अभी भी पोर्ट सिटी परियोजना और श्रीलंका में चीनी वित्त पोषित बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को जारी रखने के लिए चीन पर बहुत अधिक निर्भर करता है। हालांकि हंबनटोटा बंदरगाह कथित तौर पर नुकसान कर रहा है, लेकिन इसकी रणनीतिक अवस्थिति के कारण इसके विकास की बहुत अधिक संभावनाएं हैं। श्रीलंका में संचार के सबसे व्यस्ततम समुद्री लेन के बीच अवस्थित अत्यधिक सामरिक महत्त्व वाले बंदरगाह मौजूद हैं। श्रीलंका का कोलंबो पोर्ट दुनिया का 25 वां सबसे व्यस्त कंटेनर पोर्ट है और त्रिंकोमाली में अवस्थित प्राकृतिक गहरे पानी का बंदरगाह (Natural Deep Water Harbor) दुनिया का पांचवा सबसे बड़ा प्राकृतिक बंदरगाह है। दूसरे विश्व युद्ध के दौरान पूर्वी बेड़े और ब्रिटिश रॉयल नेवी का मुख्य बेस पोर्ट सिटी ऑफ ट्रिनकोमेली ही था। इस प्रकार श्रीलंका की अवस्थिति (Location) वाणिज्यिक और औद्योगिक दोनों उद्देश्यों की पूर्ति कर सकती है और इसका उपयोग सैन्य अड्डे के रूप में किया जा सकता है।

भारत-श्रीलंका के मध्य राजनीतिक संबंध

गृहयुद्ध से उभरे एवं मानवाधिकारों के हनन के आरोपों का सामना कर रहे देश के रूप में श्रीलंका की घरेलू राजनीति और इसके अंतरराष्ट्रीय संबंध विदेशी शक्तियों के निहित स्वार्थों के कारण अत्यधिक "भू-राजनीतिक" स्वरूप लिए हुये माने जा सकते हैं। भारत और श्रीलंका के बीच राजनीतिक संबंधों को दोनों के बीच नियमित अंतराल पर होने वाली उच्च स्तरीय यात्राओं के आदान-प्रदान से देखा जाता है। फरवरी 2015 में श्रीलंका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति मैत्रीपाला सिरिसेना ने भारत की अपनी पहली आधिकारिक यात्रा की, और मोदी जी ने इसके बाद मार्च 2015 में कोलंबो की वापसी यात्रा की। वे 28 वर्षों बाद श्रीलंका की स्टैंड-अलोन यात्रा करने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री थे। भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने जून 2019 में अपने दूसरे कार्यकाल के दौरान श्रीलंका की अपनी पहली विदेश यात्रा की जो दोनों देशों के बीच विशेष महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक संबंधों का संकेत है। श्रीलंका बिम्सटेक (Bay of Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and Economic

Cooperation- BIMSTEC) और सार्क (SAARC) जैसे क्षेत्रीय समूहों का सदस्य है, जिसमें भारत एक अग्रणी भूमिका निभाता है। श्रीलंका लंबे समय से भारत की भू-राजनीतिक दायरे का हिस्सा रहा है, लेकिन चीन के साथ इसके संबंध हाल के वर्षों में मजबूत हुए हैं। श्रीलंका के पूर्व राष्ट्रपति राजपक्षे ने श्रीलंका की चीन से नज़दीकी बढाई और साथ ही साथ लंबे समय

श्रीलंका के गृह-युद्ध (Civil War) का संक्षिप्त इतिहास

1948 में ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र होने के बाद से ही श्रीलंका जातीय संघर्ष (Ethnic Conflict) के दलदल में फंसा हुआ है। 2001 की सरकारी जनगणना के अनुसार श्रीलंका की मुख्य जातीय आबादी (Ethnic Populations) सिंहली (82%), तमिल (9.4%) और श्रीलंका मूर (7.9%) है। आजादी के बाद सिंहलीयों (जिन्होंने औपनिवेशिक काल के दौरान तमिलों के प्रति अंग्रेजों के पक्षकारी (Favoritism) दृष्टिकोण का विरोध किया) ने भारत से आये हुए तमिल प्रवासी बागान श्रमिकों को विस्थापित कर दिया और सिंहल को आधिकारिक भाषा बना दिया। 1972 में, सिंहलीयों ने देश का नाम सीलोन (Ceylon) से बदलकर श्रीलंका कर दिया और बौद्ध धर्म को देश का प्राथमिक धर्म बना दिया। जैसे-जैसे जातीय तनाव (Ethnic Tension) बढ़ता गया, 1976 में वेलुपिल्लई प्रभाकरन के नेतृत्व में LTTE का गठन किया गया और इसने उत्तरी और पूर्वी श्रीलंका में एक तमिल मातृभूमि (Tamil homeland) के लिए प्रचार करना शुरू कर दिया जहाँ अधिकांश द्वीपों पर तमिल निवास करते हैं। 1983 में LTTE ने सेना के एक काफिले पर घात लगाकर हमला कर दिया जिसमें 13 सैनिक मारे गए और परिणामस्वरूप दंगे भड़के जिसमें लगभग 2,500 तमिल मारे गए। ज्ञात रहे कि दक्षिण भारत और श्रीलंका को दो से भी अधिक सदियों से जातीय संबंधों ने आपस में घनिष्ठ रूप से जोड़ रखा है। भारत दुनिया के 77 मिलियन तमिलों में से लगभग 60 मिलियन से भी अधिक का घर है जबकि श्रीलंका में लगभग 4 मिलियन तमिल रहते हैं। 1983 में जब श्रीलंकाई तमिलों और सिंहली बहुसंख्यकों के बीच युद्ध छिड़ गया, तो भारत ने इसमें सक्रिय भूमिका निभाई। श्रीलंकाई संघर्ष के राजनीतिक समाधान हेतु 1987 में भारत-श्रीलंका समझौते (Indo-Sri Lankan Accord) पर हस्ताक्षर किए गए थे। इस समझौते ने श्रीलंका के नौ प्रांतों के लिए प्रांतीय परिषद प्रणाली (Provincial Council System) की स्थापना और शक्ति के हस्तांतरण (Devolution of Power) का प्रस्ताव रखा (जिसे तेरहवें संशोधन के रूप में भी जाना जाता है)। भारत ने ऑपरेशन पवन के तहत श्रीलंका में इंडियन पीस कीपिंग फोर्स (IPKF) को तैनात किया ताकि अलग-अलग आतंकवादी समूहों को निष्क्रिय किया जा सके। बढ़ती हुई हिंसा के बीच तीन साल बाद आईपीकेएफ (IPKF) को हटा लिया गया। श्रीलंका का हिंसक जातीय संघर्ष 2009 में समाप्त हो गया और उस समय भारत युद्धग्रस्त क्षेत्रों के पुनर्निर्माण के लिए सहमत हो गया और कई पुनर्वास कार्यक्रमों को शुरू किया गया। हालांकि भारत ने श्रीलंका में कथित मानवाधिकारों के उल्लंघन की जांच के लिए अमेरिका द्वारा प्रायोजित UNHRC के प्रस्ताव पर 2009, 2012 और 2013 में श्रीलंका के खिलाफ मतदान किया।

से चल रहे श्रीलंकाई गृहयुद्ध से विस्थापित तमिलों के पुनर्वास सहित भारतीय चिंताओं को दरकिनार कर दिया।

सांस्कृतिक संबंध

भारत और श्रीलंका के बीच सांस्कृतिक संबंध बहुत मजबूत हैं। भारतीय मूल के लोग (People of Indian Origin-PIOs) में सिंधी, गुजराती, मेमन, पारसी, मलयाली और तेलुगु भाषी लोग शामिल हैं जो श्रीलंका में बस गए हैं और वहां विभिन्न व्यापारिक उपक्रमों में लगे हुए हैं। हालांकि उनकी संख्या भारतीय मूल के तमिलों (IOTs) की तुलना में बहुत कम है, लेकिन वे आर्थिक रूप से समृद्ध हैं और वहां पर अच्छी तरह से रच-बस गए हैं। इनमें से प्रत्येक समुदाय के अपने समूह हैं जो अपने-अपने त्योहारों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। इसके अतिरिक्त बौद्ध धर्म भारत और श्रीलंका के

बीचर एक-दुसरे को जोड़ने वाली धार्मिक कड़ी के रूप में कार्य करता है। दोनों देशों की सरकारों ने 29 नवंबर, 1977 को आपस में सांस्कृतिक सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए गए जो दोनों देशों के बीच समय-समय पर सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों का आधार है। कोलंबो में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र सक्रिय रूप से भारतीय संगीत, नृत्य, हिंदी और योग आदि की कक्षाएं देकर भारतीय संस्कृति के बारे में जागरूकता बढ़ाता है। हर साल, दोनों देशों के सांस्कृतिक समूह आपस में यात्राओं का आदान-प्रदान करते हैं। दिसंबर 1998 में एक अंतर-सरकारी पहल के रूप में स्थापित भारत-श्रीलंका फाउंडेशन दोनों देशों के नागरिक समाज के आदान-प्रदान के माध्यम से वैज्ञानिक, तकनीकी, शैक्षिक और सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ाने और दोनों देशों की युवा पीढ़ीयों के बीच संपर्क को बढ़ाने का उद्देश्य रखता है। शिक्षा भी दोनों देशों के बीच सहयोग का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। भारत अब श्रीलंका के छात्रों को प्रतिवर्ष लगभग 290 छात्रवृत्ति स्लॉट प्रदान करता है। इसके अलावा भारतीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग योजना और कोलंबो योजना के तहत भारत श्रीलंका के नागरिकों को प्रतिवर्ष 370 स्लॉट प्रदान करता है। भारत सरकार ने लोगों से संपर्क (People to People Contact) बढ़ाने के लिए 14 अप्रैल 2015 को श्रीलंका के पर्यटकों के लिए औपचारिक रूप से ई-टूरिस्ट वीजा (eTV) योजना शुरू की।

व्यापारिक संबंध

सार्क (SAARC) देशों में श्रीलंका भारत के सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में से एक है। भारत वैश्विक स्तर पर श्रीलंका का सबसे बड़ा व्यापारिक सहभागी भी है। 2015-17 में भारत से श्रीलंका को $5.3 बिलियन डॉलर का निर्यात था, जबकि श्रीलंका से भारत का आयात $743 मिलियन डॉलर था। भारत और श्रीलंका ने 1998 में मुक्त व्यापार समझौते (Free Trade Agreement-FTA) पर हस्ताक्षर किए, जिससे दोनों देशों के बीच व्यापार संबंधों में वृद्धि हुई। मार्च 2000 में लागू हुए भारत-श्रीलंका मुक्त व्यापार समझौते के बाद दोनों देशों के बीच व्यापार में विशेष रूप से तेजी आयी। हालाँकि, भारत से श्रीलंका के लिए निर्यात में अत्यधिक वृद्धि हुई है, जिसके परिणामस्वरूप व्यापार संतुलन में काफी अंतर देखने को मिलता है। यह असंतुलन बड़े पैमाने पर भारतीय आवश्यकता को पूरा करने के लिए श्रीलंका की कम निर्यात क्षमता और भारतीय निर्यात-प्रतिस्पर्धा की वजह से भारत से श्रीलंका में आयात की वृद्धि के कारण भी है।

रक्षा और सुरक्षा (Defence and Security) सहयोग

भारत और श्रीलंका के बीच सुरक्षा सहयोग का एक लंबा इतिहास रहा है। हाल के वर्षों में दोनों पक्षों ने अपने सैन्य संबंधों (Military-to-Military Relationship) में लगातार वृद्धि की है। भारत और श्रीलंका संयुक्त सैन्य अभ्यास ('मित्र शक्ति') और नौसेना अभ्यास (SLINEX) आयोजित करते हैं। भारत श्रीलंका की सेनाओं को रक्षा प्रशिक्षण भी प्रदान करता है। भारत, श्रीलंका तथा मालदीव द्वारा त्रिपक्षीय समुद्री सुरक्षा सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए गए जिससे निगरानी, एंटी-पायरेसी ऑपरेशन में सुधार हो सके और हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री प्रदूषण को कम किया जा सके। अप्रैल 2019 में भारत और श्रीलंका ने ड्रग और मानव तस्करी (Drug and Human trafficking) का मुकाबला करने के लिए भी समझौता किया।

कच्चातीवू/काछाथीवू (Katchatheevu) द्वीप का विवाद

रामेश्वरम से तकरीबन 10 मील दूर भारत और श्रीलंका के बीच पाक जलडमरूमध्य में स्थित 280 एकड़ का यह बंजर द्वीप 1974 तक भारतीय क्षेत्र में शामिल था। ऐतिहासिक दस्तावेज बताते हैं कि काछाथीवू मद्रास प्रांत के राजा रामनद की जमींदारी के अंतर्गत आता था। तमिलनाडु के मछुआरे दशकों से यहां मछली पकड़ने और जाल सुखाने आते रहे हैं। हालांकि 1920 के आस-पास मद्रास प्रांत और तत्कालीन सीलोन सरकार के प्रतिनिधियों के बीच बातचीत में सीलोन ने

काछाथीवू पर अपना अधिकार जताया था। लेकिन दोनों देशों की आजादी के बाद सालों तक यह मुद्दा प्रमुखता से कहीं नहीं उठा। काछाथीवू सरकारी दस्तावेजों में भारत का हिस्सा बना रहा और यह स्थिति 1974 तक कायम रही। इस समय श्रीलंका में श्रीमाओ भंडारनायके प्रधानमंत्री थीं और यही वह दौर था जब वे अपने राजनीतिक जीवन के सबसे मुश्किल वक्त में थीं। 1974 के साल में ही उन्होंने भारत की यात्रा की थी और कहा जाता है वे इंदिरा गांधी की काफी करीबी थीं। उनकी इस यात्रा के दौरान ही काछाथीवू को विवादित क्षेत्र मानते हुए एक समझौते के तहत श्रीलंका को सौंपा गया था। भंडारनायके के लिए जहां यह समझौता अपनी राजनीतिक ताकत दोबारा हासिल करने का जरिया बना था। वहीं, भारत सरकार की सोच थी कि इससे दोनों देशों के मैत्री संबंध प्रगाढ़ होंगे। इस समझौते में प्रावधान किया गया था कि तमिलनाडु के मछुआरे काछाथीवू के आसपास आगे भी बेरोकटोक मछली पकड़ने आ सकते हैं।

1976 में भारत और श्रीलंका के बीच समुद्री सीमा तय करने के लिए एक और समझौता हुआ। इसमें प्रावधान था कि श्रीलंकाई समुद्र के विशेष आर्थिक क्षेत्र में भारतीय मछुआरों को मछली पकड़ने की अनुमति नहीं होगी। इसमें पहले के प्रावधान पर कोई स्पष्टीकरण नहीं था। हालांकि इस समझौते के बाद भी तमिलनाडु के मछुआरे काछाथीवू के आस-पास मछली पकड़ने का काम करते रहे। लेकिन कुछ साल पहले श्रीलंका नौसेना ने इस पर आपत्ति जताते हुए कई मछुआरों को हिरासत में ले लिया था। कुछ नौसेना की गोलीबारी में मारे भी गए थे। इसको देखते हुए तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री करुणानिधि ने 2008 में सर्वोच्च न्यायालय में एक याचिका दाखिल की जिसमें काछाथीवू द्वीप को श्रीलंका से वापस लेने की मांग की गई थी। इसके बाद से यह मामला दोनों देशों में चर्चा का विषय बना हुआ है।

निष्कर्ष

भारत दक्षिण एशियाई क्षेत्र के देशों विशेष रूप से श्रीलंका के साथ एक साझा सांस्कृतिक और सुरक्षा संबंध रखता है। भारत के पास दक्षिण एशिया में अपने महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए अपने निकटतम पड़ोसियों के साथ शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने की विशेष जिम्मेदारी है। भारत को अपनी बड़े भाई की छवि को छोड़ना चाहिए और गृहयुद्ध से अस्थिर श्रीलंका के पुनर्निर्माण के लिए सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। भारत को श्रीलंका की सहायता के लिए हिंद महासागर में ब्लू वाटर नेवी के रूप में उभरने की आवश्यकता है। दोनों देशों को एक-दूसरे की चिंताओं की वैधता को पहचानना चाहिए और इस तरह से काम करना चाहिए जो दोनों के लिए पारस्परिक रूप से लाभकारी हो।

सन्दर्भ स्त्रोत

1. यादव, आर. एस. (2013), भारत की विदेश नीति, “श्रीलंका से संबंध”, पियर्सन एजुकेशन इंडिया।
2. http://www.idsa.in/idsacomments/problem-of-fishermen-in-india-sri-lanka-relations_gsen_200516
3. http://www.idsa.in/idsacomments/IndiasabstentioninthevoteagainstSriLankaatGeneva_sspattanaik_160414
4. https://www.insightonconflict.org/conflicts/sri-lanka/conflict-profile/